हरिकेश बल

गंगा के सूखे बालुई किनारों पर गरीबों की एक मलिन बस्ती थी। मरे पशुओं की खाल, हड्डियाँ निकालकर बेचना, श्मशान पर जलते मुर्दों के कपड़े और सामान उठाना बस्ती के लोगों का काम था।

इस बस्ती में बलकोट नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसकी पत्नी का नाम था गौरी। गौरी के पुत्र का नाम था बल। बड़ा ही बेडौल, कुरूप और काला-कलूटा था।

माँ ! मुझे जल्दी खाना दे दो। मैं बस्ती के लड़कों के साथ खेलने जाऊँगा।

बेटा ! अभी देती हूँ।

बल ने जल्दी-जल्दी खाना खाया।

पास के मैदान में बस्ती के लड़के खेल रहे थे। बल भी उनके पास जाकर बोला—
मुझे भी अपने साथ खिलाओ।
तुझे खिलायें ? अरे कालिया ! दूर हट।
जा पहले गंगा में अपना मुँह तो देख। कितना गंदा और बेडौल है। छिः छिः।
सभी लड़के उसका मजाक उड़ाने लगे।

बच्चों की हिकारत सुनकर बल रोने लगा—
मुझे कालिया क्यों कहते हो ? क्या मुझे अपने साथ नहीं खिलाओगे ?

नहीं ! तू सबसे तो झगड़ता रहता है। जब नाक-मुँह फुलाता है तो ऐसा लगता है, जैसे यमराज का भैंसा हो। तेरे पास खड़े रहने से भी हमें नफरत है। जा भाग जा।

कुछ शरारती लड़के बल को लकड़ी से पीटने लगे। बल बड़ा जिद्दी था। वह पिटता रहा—
मैं यहाँ से नहीं हटूँगा। तुम सबको पत्थरों से मार-मारकर भगा दूँगा।
ले, डण्डा खा ! और खेलेगा हमारे साथ।

वह बच्चों पर पत्थर फेंकने लगा—
लो, अब मजा आया। मुझे चिढ़ाते हो।
अरे, यह तो पत्थर मारने लगा। पीटो इसको।
सब बच्चों ने मिलकर बल की पिटाई कर दी।
पीटो इसको।
तभी बल की माँ वहाँ आ गई। बल ने कहा—
माँ! मुझे ये लोग पीटते हैं। पत्थर मारते हैं।
बच्चों! मिल-जुलकर खेलो। बल को भी अपने साथ खिलाओ।
नहीं! यह हम पर थूकता है। गाली देता है।
पहले तुमने मुझे पीटा, गाली दी।
देखो, इसने कैसे गंदे, फटे कपड़े पहन रखे हैं।
तुमने मुझे गन्दा कहा। अभी मजा चखाता हूँ।
बल! रुको।
बल गुस्से में आकर फिर पत्थर फेंकने लगा। माँ उसे घर ले आई।